ठाणे सांसद ने आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किये

लाडनूं, 22 मई।

मुंबई के ठाणा क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद डॉ. संजीव नाइक ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि डॉ. नाइक दिल्ली में शपथ लेने से पूर्व आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दर्शन करने जैन विश्व भारती लाडनूं आए।

आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें पारदर्शिता, नैतिकता के साथ समर्पण भाव से जनता की सेवा करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि जिससे जनता भी यह सोचे कि हमने सही व्यक्ति को चुनकर संसद तक पहुंचाया है।

डॉ. संजीव नाइक ने कहा कि मैं हर कसौटी पर खरा उतरने का प्रयास करूंगा। साथ ही आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा के मिशन को जनता तक पहुंचाऊंगा जिससे देश के सामने आतंकवाद की खतरनाक समस्या है उसे मिटाया जा सके।

डॉ. नाईक ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की एक शाखा मुंबई में भी होना अपेक्षित बताते हुए कहा कि जिसकी जगह की व्यवस्था मेरी होगी।

इस अवसर पर नगर सेवक श्री अर्जुन सिंघवी, पूर्व सभापति श्री भास्कर सेठी, समाजसेवी श्री लादूलाल श्रीश्रीमाल, तेरापंथ युवक परिषद वाशी के अध्यक्ष श्री अमृतलाल जैन, श्री इकबाल भाई, श्री सुनील पाटिल, श्री अनूपचन्द बोथरा आदि विशिष्ट महानुभाव उपस्थित हुए।

इस अवसर पर जैन वि-व भारती की ओर से श्री पन्नालाल चौरड़िया ने साहित्य भेंट कर उनका स्वागत किया।

शांतिपूर्ण सहअस्तित्व शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य हो : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 22 मई, 2009।

शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के तत्वावधान में बी.एड एवं एम.एड प्रशिक्षणार्थियों ने अनुशास्ता प्रेक्षाप्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवाचार्यश्री महाश्रमणजी एवं साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के आशीर्वचनों के माध्यम से सम्पूर्ण जीवन को सफल बनाने हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि वर्तमान शिक्षा द्वारा बौद्धिक विकास प्रचुर मात्रा में हो रहा है लेकिन भावनात्मक विकास भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समय की मांग है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व को विकसित करते हुए जीवन को जानना, अनुभव प्राप्त करना, समय का मूल्यांकन एवं जीने की कला में निपुणता का पुट होना चाहिए। शिक्षा वह साधन हो जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने संवेग-आवेग क्रोध, घृणा, हिंसा, राग-द्वेष आदि पर नियंत्रण करे जिससे शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना का विकास शिक्षा का परम लक्ष्य बन जाए। आचार्यश्री ने चरित्र निर्माण पर बल देते हुए कहा कि धन सम्पति की सुरक्षा से भी अधिक चरित्र की सुरक्षा आवश्यक है अतः चरित्र एवं मूल्य निर्माण करने वाली शिक्षा की आज परम आवश्यकता है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि जैन आगमों में शिक्षा के प्रमुख चार उद्देश्य निर्धारित हैं - ज्ञान की प्राप्ति, चित्त की एकाग्रता, स्वयं को सन्मार्ग पर एवं सभी को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना। गुरु शब्द की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि गुरु शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। गु + रु। जिसका तात्पर्य है - अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना। इस कारण गुरु का उत्तरदायित्व और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि आचार्यश्री तुलसी युग द्रष्टा थे जिन्होंने वर्तमान युग की परिवर्तन धारा के अनुसार स्त्री शिक्षा को महत्त्वपूर्ण माना और विशेष रूप से धर्म संघ की सभी साध्वियों के लिए एक प्रेरक मंत्र ''शिक्षा है तो दीक्षा है'' प्रदान किया। इसी विचारधारा पर विश्वविद्यालय एवं पारमार्थिक शिक्षण संस्थान की नींव रखी गई। वर्तमान शिक्षा में महिला शिक्षिकाओं की भूमिका एक मां के समान है क्योंकि वह मनोवैज्ञानिक रूप से विद्यार्थियों को ममत्व, करुणा प्रदान करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करें।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति महोदया डॉ. समणी मंगलप्रज्ञाजी भी उपस्थित रही। शिक्षा विभाग में जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग की प्रतिदिन आयोजित अनिवार्य कक्षाओं के विशय में आचार्यश्री को अवगत करवाया।

इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. बी.एल. जैन ने आचार्य प्रवर को विभागीय गतिविधियों से अवगत करवाया एवं कहा कि सदैव आपका पावन सान्निध्य हमें भविष्य में भी इसी प्रकार प्राप्ता होता रहेगा तो अवश्य ही हम सन्मार्ग पर प्रेरित होते हुए विश्वविद्यालय के पावन लक्ष्यों की पूर्ति में सदैव तत्पर रहेंगे।

एम.एड. छात्रा मधुकुमारी ने गीत के माध्यम से अपने अनुभवों को प्रस्तुत किया एवं ज्योति अग्रवाल ने स्वानुभव बताते हुए कहा कि हमारे सभी गुरुजन हमें परिवार के सदस्य के रूप में सदैव अपना स्नेह, मार्गदर्शन करते हैं। बी.एड की छात्राध्यापिकाओं प्रियंका मिर्धा, गरिमा औझा एवं प्रियंका शर्मा ने भी अपने अनुभव बताये।

इस अवसर पर शिक्षा संकाय सदस्य श्री मनीष भटनागर, श्री बी.प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, श्रीमती अमिता जैन, श्रीमती सरोज राय, श्री गिरिराज भोजक, श्रीमती आभासिंह, श्रीमती स्मिता बालोकर एवं श्री घासीलाल शर्मा ने अपना-अपना सहयोग प्रदान किया।

किशोर मण्डल का राष्ट्रीय अधिवेशन आज से

लाडनूं, 22 मई, 2009।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में भावी पीढी को सुसंस्कारी बनाने के लिए जैन विश्व भारती लाडनूं में 13 से 21 वर्ष से 21 वर्ष के किशोरों का पांचवा राष्ट्रीय अधिवेशन आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में 23 मई 2009 को प्रातः 9.15 बजे से सुधर्मा सभागार लाडनूं में प्रारम्भ होगा।

23 से 25 मई तक इस तीन दिवसीय अधिवेशन में देश के अलग-अलग कोनों से लगभग 250 किशोरों की सहभागिता दर्ज कराने की संभावना है।

इस अधिवेशन में विभिन्न सत्रों में विभिन्न विषयों पर विषय विशेषज्ञ संतों के द्वारा किशोरों को संस्कार को पुष्ट करने का प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

अधिवेशन में ''आचार्य महाप्रज्ञ के अवदान'' विषय पर भाषण प्रतियोगिता, ''तुलसी-तुलसी मेरे'' संगीत प्रतियोगिता, ''श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. नरेन्द्रजैन स्मृति प्रश्नमंच प्रतियोगिता'' समूह प्रस्तुति प्रतियोगिता आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से किशोरों को सुसंस्कारी नागरिक बनने की प्रेरणा दी जाएगी।

किशोर मण्डल राष्ट्रीय प्रभारी सुबोध दुगड़ ने बताया कि उक्त अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष मर्यादा कुमार कोठारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संजय खटेड़, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष प्रदीप बोथरा एवं अन्य राष्ट्रीय टीम के सदस्य भाग लेंगे।

अशोक सियोल

99829 03770